रविवार, दिनाँक 16-06-2024 को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

अब सब सजन जागृति में आ जाओ क्योंकि जिस ओर समय बढ़ रहा है, उसे मध्य-नज़र रखते हुए हर सजन के लिये बनता है कि वह चेतनता में आने हेतु स्वार्थ से परमार्थ बनने में लेशमात्र भी विलम्ब न करे। सजनों अगर आपने ऐसा करने का निश्चय ले लिया है तो अपने साथ अब धोखा मत करना। इस विषय में यदि आपका निश्चय पक्का है तो मिलकर बोलोः-

बोल सजन श्री शहनशाह महाबीर बजरंग बली जी की जय

बोल सजन श्री शहनशाह महाबीर बजरंग बली जी की जय

बोल सजन श्री शहनशाह महाबीर बजरंग बली जी की जय

अब आप स्वार्थ से परमार्थ बनने के प्रति जागृति में आ सको इस हेतु ध्यानपूर्वक सुनो ताकि किसी वजह से भी बुद्धि धोखा न दे जायेः-

लगदेम प्यारे जी लगदेम प्यारे जी, रघुनाथ जी दे सांवले चरण।

सांवले चरण, डाहढे सोहणे चरण, मन मोहने चरण।।

संसार सागर विच किशती पड़ी है, कौन हुण पार उतारे जी।

रघुनाथ जी दे सांवले चरण, लगदेम प्यारे जी।।

महाबीर जी दे चरणां नाल प्रीत लगाओ, ओही किशती नूं पार उतारे जी।

रघुनाथ जी दे सांवले चरण, लगदेम प्यारे जी।

रघुनाथ जी दे चरणां दे हैन प्यारे, नाले आँखों के हैन ओ तारे जी।

रघुनाथ जी दे सांवले चरण, लगदेम प्यारे जी।।

मैं दासी बली बली पुकारां, ओ त्रिलोकी दे हैन सहारे जी।

रघुनाथ जी दे सांवले चरण, लगदेम प्यारे जी।।

कंधे हीरियाँ वाली गदा साजे, हथ विच चरण प्यारे जी।

रघुनाथ जी दे सांवले चरण, लगदेम प्यारे जी।।

हथ धनुष मस्तक तिलक बिराजे, सारी दुनियां दे हैन सहारे जी।

रघुनाथ जी दे सांवले चरण, लगदेम प्यारे जी।।

मन मोह लिया सांवली सूरत ने, सारी दुनियां दे चमकारे जी।

रघुनाथ जी दे सांवले चरण, लगदेम प्यारे जी।।

राज अटल तुआडा सदा ही राहवे, दासी हथ जोड़ अर्ज़ गुजारे जी।

रघुनाथ जी दे सांवले चरण, लगदेम प्यारे जी।।

यह भजन सुनने के पश्चात हम मानते हैं कि आप सबके मन में भी इसी जन्म में भवसागर से पार उतरने की इच्छा पैदा हुई होगी। इस इच्छापूर्ति हेतु सच्चेपातशाह जी कहते हैं कि सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के जो शास्त्र विहित परमार्थ अनुसार जीवन जीने के प्रति वचन हैं, उन वचनों को स्मृति में रखते हुए वैसा ही निष्पाप जीवन जीना आरम्भ कर दो। सारतः समझो तो यह संसार की तरफ से अपने ख़्याल को हटाकर उसे अन्तर्मुखी करने व अपने आत्म-स्वरूप में साधने की मंगलकारी बात है। अब निश्चय आपके स्वयं के हाथ में है। चाहो तो भवसागर पार उतरकर अपने सच्चे घर पहुँच विश्राम पा जाओ या फिर चाहो तो जन्म-मरण के चक्कर में उलझे रह पीड़ायुक्त जीवन जीते हुए पल-पल मरते रहो। सजनो यहाँ जब मरना कहते हैं तो यह दुःख भोगने की बात होती है क्योंकि इस दशा में हमें दिन-रात संसार की नकारात्मक सोच सताती रहती है। अतः मानो कि जिस किसी का भी ख़्याल संसार में घूमता रहता है, वह मूर्ख इन्सान विमुख दिशा में चलता है और जिसका ख़्याल परमार्थ में चलता है उसकी दिशा सरल और सीधी होती है। इस तरह दोनों की चलने की दिशाएँ अलग-अलग हैं। एक दिशा ख़्याल को मनुराज में उलझा देती है जबकि दूसरी दिशा इन्सान को स्वतन्त्र बुद्धि बना उसे मनःशान्ति प्रदान कर देती है।

इस परिप्रेक्ष्य में जिसका मन शान्त हो जाता है, उस इन्सान को स्वतः आत्मबल से परिचय हो जाता है। आत्मबल से परिचय होते ही हृदय परिपूर्णतया प्रकाशित रखने हेतु इन्सान अपने ख़्याल को आत्म-स्वरूप आद् अक्षर 'ओ३म्' में लीन कर देता है और अपने यथार्थ परमात्म स्वरूप का साक्षात्कार कर हर्षा उठता है। यहाँ विडम्बना की बात यह है कि कलुकाल के भाव-स्वभाव में उलझे हुए सजन समझ ही नहीं पा रहे कि वास्तव में हम कौन

हैं, क्या हैं और कैसे अपने यथार्थ बल से परिचित हो सकते हैं? अब सजनों जब हम अपने यथार्थ को समझने में ही असमर्थ हैं तो हमारी सुरत की पहुँच परमात्मा तक कैसे हो सकती है? हम कैसे परमार्थ स्वरूप होकर जगत कल्याण के निमित्त सुकर्म करते हुए निर्विकारी बने रह सकते हैं? इस संदर्भ में सजनों हमारी प्रार्थना स्वीकारो और स्वार्थ से परमार्थ बनने के निमित्त थोड़ा समय लगाओ। इसके लिये खुद पर आत्म-नियन्त्रण रखो ताकि ख़्याल की जो हलचल चलती है, उसे अफुरता में साध सको। अब आपके अन्दर सकारात्मक सोच पनपे इस हेतु ध्यान से सुनोः-

दुनियाँ वाले समझ नहीं पये सकदे कि तुसी कौन हो और क्या हो

मेरे साजन जी, मेरे साजन जी, मेरे साजन जी, मेरे साजन जी

सर्व ढूँढां तैनूं, सर्व अपना ही निगाह आया,

सर्व विस्तार है मेरा, सर्व ही मैं हर्षाया

मेरे साजन जी, मेरे साजन जी.....

दुनियाँ वाले समझ नहीं पये सकदे, कि तुसी कौन हो और क्या हो

तुहाडी लीला दा वर्णन कोई नहीं कर सकदा,

मेरे साजन जी तुसी सर्व-सर्व

सारे ब्रह्माण्ड विच तुहाडी ही हकूमत

सारे ब्रह्माण्ड विच तुहाडी ही हकूमत

तुसी हकूमत दे मालिक हो

तुसी हकूमत दे मालिक हो

मेरे साजन जी, मेरे साजन जी.....

दुनियाँ वाले समझ नहीं पये सकदे

कि तुसी कौन हो और क्या हो

दुनियाँ वाले ओ.........

दुनियाँ वाले आ.........

दुनियाँ वाले समझ नहीं पये सकदे

कि तुसी कौन हो और क्या हो

सजनों अब आपको समझ आ गई है कि मानव चोला कितना अमोलक है? इसके मोल को जानो क्योंकि यह आसानी से प्राप्त नहीं होता। अतः दुनियावी रीति-नियमों में उलझकर इसे वृथा मत गँवाओ। कहने का तात्पर्य यह है कि अगर आपकी सुरत/ख़्याल हर क्षण जगत के संग जुड़ा रहता है तो आप अपने यथार्थ स्वरूप की शक्ति कदापि नहीं पहचान सकते। सजनों जब अपने यथार्थ स्वरूप की शक्ति पहचानने की क्षमता ही नहीं रहती तो कोई भी परिस्थिति आपके मन की शान्ति को भंग कर देती है। तब फिर जीवन अशान्तिपूर्ण चलता है और वही चलन आप अपने बच्चों को पालना के समय देते हो। इस तरह एक तो अपना जीवन बर्बाद करने की गलती करते हो दूसरा अपने से जुड़े अन्य अनेक मानवों का जीवन भी बर्बाद करने का कारण बनते हो। जानो यह जघन्य पाप है, यह जीवन वृथा खोने की बात है और यही ख़्याल के बहिर्मुखी होने का परिचायक है। हैरानी की बात तो सजनों यह है कि सब कुछ पता होते हुए भी आप सजन सम्भलने में नहीं आते? क्योंकर आपकी सुरत अपना शहनशाही ठाठ-बाठ से भरा घर छोड़कर, नश्वर घरों में क्षण-क्षण में बदलने वाली परिस्थितियों में उलझना पसन्द करती है? माना कि इससे उसे सांसारिक क्षण-भंगुर प्रसन्नता तो मिलती है परन्तु उसका अन्त परिणाम सर्वदा दुःखद होता है। फिर जीवन इसी ऊँच-नीच में, जन्म-मरण के चक्र-व्यूह में वृथा समाप्त हो जाता है। ऐसी गलती करके आप अपना पूरे का पूरा परमार्थी धन लुटा देते हो। स्पष्ट है सजनों जब आप परमार्थ से स्वार्थ बन जाते हो तो कोई भी आपको सरलता से बहकाकर छल सकता है क्योंकि आप जीवन के सत्य से परिचित नहीं होते।

इस सन्दर्भ में जानो कि जब किसी भी विषय के सत्य से इन्सान अनिभिज्ञ हो जाता है तो कोई भी उसे बहकाकर अपने अधीन कर सकता है और बहका हुआ इन्सान बुद्धिहीनों की तरह गलत पर गलत करता जाता है व अन्ततः उन सजनों के शिकंजे में फँस जाता है। फिर जब सारे संसारी हमारे सिर पर सवार हो जाते हैं तो उनका इतना भारी बोझ

उतारना कठिन लगने लगता है। इस संदर्भ में सजनों इस बोझ को उतार सहज भाव से हल्का-फुल्का होकर जगत में विचरने की युक्ति सजन श्री शहनशाह हनुमान जी ने हम सबको बख़्शी हुई है। अतः उस युक्ति का प्रयोग करो और निश्चय लो कि इस विषय में अब किसी से कुछ भी पूछने की आवश्यकता नहीं। इस प्रकार अपने जीवन को सच्चेपातशाह जी की तरह पावन और पवित्र बना लो व 'एकरूप' नाम कहा अमरता के प्रतीक बन जाओ। ऐसा करने से निश्चित रूप से आपका नाम रौशन हो जाएगा और आप भी सच्चेपातशाह जी की तरह हकूमत की कुर्सी के मालिक हो जाओगे। इस सन्दर्भ में मानो कि जब सुमतिवान दाता कुदरती शास्त्र के द्वारा अनथक प्रयास करके आपको कुमति छोड़ सुमति में आने के लिये आवाहन दे रहे हैं तो आप क्योंकर पागलों की तरह वहीं अटके पड़े हो? जानो कि यह दुनियाँ एक तो मुसाफिरखाना है और दूसरा पागलखाना है। इसीलिए तो विवेकशक्ति व आत्मशक्ति होते हुए भी हम ख़्याल/ध्यान इस्थर करने में कमजोर हैं। जानो कि हमने तो अपने ख़्याल/ध्यान को आत्म-प्रकाश में इस्थर करना है। इतना सा काम करने में जो इन्सान इतना अधिक समय लगा दे मानो वह नकारा हो जाता है। अब जैसे सच्चेपातशाह जी ने कर दिखाया और हकूमत की कुर्सी के मालिक कहलाये, सजनों आप भी वैसा करने के प्रति प्रोत्साहित होवो इस हेतु अब ध्यान से कीर्तन सुनोः-

(श्री साजन जी के मुख के शब्द)

सर्व राम रूप दिस्सां सर्व है स्थान मेरा।

सर्व जोत मेरी जगे, जगमगे जहान जेहड़ा, सर्व राम रूप दिस्सां।।

राम रूप हां घट घट वासी, राम रूप हां सर्व निवासी।

राम रूप मन मन्दिर सुहावा, राम हर अन्दर रहावा।।

सर्व राम रूप दिस्सां, सर्व है स्थान मेरा।

सर्व जोत मेरी जगे, जगमगे जहान जेहड़ा, सर्व राम रूप दिस्सां।।

(श्री हनुमान जी कह रहे हैं)

श्री राम दा दीदार है जे हीरा अनमोल ओय।

गरुड़ उत्ते साजन आये, श्री राम जी दे कोल ओय।।

शिव ब्रह्मा दी चिट्ठी आई, हनुमान जी सुनाई ए।

साजन जी फ़स्ट निकले, श्री राम नूं वधाई ए।।

सारी नगरी विच्चों फ़स्ट निकले, श्री राम नूं वधाई ए।

साजन जी फ़स्ट निकले, श्री राम नूं वधाई ए।।

बात बताई श्री राम जी, सुनाई हनुमान जी।

जोत मेरे साजन जी दी, जग रही महान जी।।

फ़स्ट निकले देश देशान्तर जोत जगे कुल जहान जी।

जोत मेरे साजन जी दी जग रही महान जी।।

इस पदवी ते कोई मुश्किल जावे, जेहड़ी पदवी साजन जी ने पाई ए।

शहनशाह ओ नगरी ऊपर, त्रिलोकी जैंदी शरणाई ए।।

त्रिलोकी जैंदी शरणाई ए, त्रिलोकी जैंदी शरणाई ए।

शहनशाह ओ नगरी ऊपर, त्रिलोकी जैंदी शरणाई ए।।

हनुमान जी ने बात बताई, श्री राम जी ने खोल सुनाई।

हो जी चतुर्भुजधारी, हर अन्दर है जोत तुम्हारी।।

हर अन्दर है जोत तुम्हारी, हर अन्दर है जोत तुम्हारी।

हो जी चतुर्भुजधारी, हर अन्दर है जोत तुम्हारी।।

श्री रामचन्द्र जी ने बाजा ओ दित्ता ए बजा।

आद अन्त ऐ जोत प्रकाशे, प्रकाश ओ रही जे दिखा।।

प्रकाश ओ रही जे दिखा, प्रकाश ओ रही जे दिखा।

आद अन्त ऐ जोत प्रकाशे, प्रकाश ओ रही जे दिखा।।

ध्वनिः-

हो जी चतुर्भुजधारी, हर अन्दर है जोत तुम्हारी।।

सजनों आपके सुधार हेतु कितनी ज्यादा मेहनत होती है परन्तु आप फिर भी लाभ नहीं उठाते। अभी आपने सुना है 'हो जी चतुर्भुजधारी, हर अन्दर है जोत तुम्हारी'। तो फिर हम, आप सब मे फर्क कहाँ रहा। जब सबके अन्दर एक ही जोत का प्रकाश है जिसे आत्मा कहते हैं तो हमारा भिन्न-भेद कहाँ हुआ। इस सन्दर्भ में हमने एकरूपता के सत्य को समझना है यानि स्वार्थ के सारे कार्य करते हुए, जो भी हमारे साथ विचरते हैं, उनके प्रति अपने कर्त्तव्यों का कुशलता से निर्वहन करते हुए, इस सत्य को दृष्टिगत रखना है। कहने का तात्पर्य यह है कि संसार का प्रत्येक कार्य-व्यवहार करते हुए हमारा ख़्याल आत्म-स्वरूप में स्थित रहे ताकि किसी प्रकार भी द्वि-द्वेष हमारे मन में घर न कर सके। याद रखो मन को शान्त रखने के लिये एकभाव/आत्मभाव, जो कि हमारा यथार्थ है उसे अपनाना आवश्यक है। ऐसा करने पर ही मन संकल्प रहित अवस्था में सधा रह यथार्थता का प्रतीक बन पायेगा और ह्रदय में सजनता का भाव उदय होगा। सजनता के भाव के उदय होते ही समभाव नजरों में हो जाएगा। समभाव नजरों में होते ही इन्सान समदृष्टि हो जाएगा और परोपकार प्रवृत्ति में ढल जाएगा। ज्ञात हो ऐसा परोपकारी सजन परोपकार करने में अपना तन-मन-धन वारने से भी नहीं सकुचाता। इसलिए तो वह अक्षय यश-कीर्ति को प्राप्त होता है। इसके विपरीत सजनों अगर हम यश-कीर्ति प्राप्त नहीं करते और सांसारिकता में उलझकर अपयश प्राप्त करते हैं तो कहीं भी हमारा सम्मान नहीं होगा यानि हम जहाँ भी जायेंगे, वहाँ ठोकरें ही ठोकरें खाएँगे।

यदि ध्यान से देखा जाये तो आज भी कोई किसी सम्बन्ध द्वारा तो कोई किसी अन्य सम्बन्ध द्वारा ठोकरें ही खा रहा है, पर फिर भी उसे यथार्थ समझ नहीं आ रहा। सजनों सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे पर होने के नाते आपसे कहीं यह भूल न हो इस हेतु उनकी युक्ति प्रवान करो। यकीन मानो फिर किसी के पीछे भागने की और किसी के आगे झुकने की आवश्यकता नहीं रहेगी अपितु केवल अपने वास्तविक अस्तित्व को पहचानना होगा। अतः सजनों जगत कल्याण के निमित्त परमात्म स्वरूप होकर सुकर्म करो ताकि जगत में महाबीर सत्संग सभा के सदस्यों द्वारा सुकर्मों के राज्य का स्थापन हो। सजनों यह आपका

निज कर्त्तव्य बनता है और अपने कर्त्तव्य का निर्वहन करने हेतु जो संसारी स्वभाव आपने अपना रखे हैं उनकी कुर्बानी दो और वीर कहलाओ। मानो जो वीर होता है वही धीर होता है। धीर ही धर्म-पथ पर स्थिरता, सत्यता से बना रह पाता है क्योंकि उस इन्सान का अन्तःकरण विशुद्ध होता है। जब अन्तःकरण विशुद्ध होता है तो जीव-ब्रह्म के खेल की रमज आप जान जाते हो और जन्म की बाज़ी जीत जाते हो। आप भी अपने जन्म की बाज़ी जीतने वाले ऐसे ही इन्सान बनो, इस हेतु अब कमजोर मत पड़ना। सबके मुख मुस्कुराते हुए नजर आयें क्योंकि आज आपको अपने यथार्थ की समझ आ गई है। अतः आज का दिन तो आपके लिये खुशी का दिन है क्योंकि आज आप यथार्थतापूर्ण और निर्विकारिता पूर्वक जीवन जीने के काबिल बनने के प्रति उत्साहित हुए हो। अब उत्साह में आए हो तो यह सब कर भी लेना। अब ध्यानपूर्वक सुनो और बोलोः

गाते चलो, हँसते चलो, गाते चलो रे।

रास्ते की मुश्किलें हटाते चलो रे।।

मिल के चलो, मिल के चलो, मिल के चलो रे ।

गाते चलो, हँसते चलो, गाते चलो रे।।

काम से खुद को बचाते चलो रे ।

क्रोध को जड़ से मिटाते चलो रे ।।

वैर को विरोध को हटाते चलो रे।

हँसते हुए औरों को हँसाते चलो रे।।

झूठ से निंदा से बच के रहो रे।

द्वैत को दिलों से मिटाते चलो रे।।

अनुशासन में रहना सिखाते चलो रे।

एकता के गीत गुनगुनाते चलो रे।।

संतोष और धैर्य को अपनाते चलो रे।

बुद्धि को निर्मल बनाते चलो रे।।

जीवन में सत्य को अपनाते चलो रे।

धर्म का परचम लहराते चलो रे।।

श्रद्धा और विश्वास को बढ़ाते चलो रे।

दुनिया में ज्ञान को फैलाते चलो रे।।

संविधान सतवस्तु का अपनाते चलो रे।

श्री साजन का डंका बजाते चलो रे।।

अब कौन सा युग आने वाला है?

'सतयुग'

सतयुग में कौन प्रगटता है?

'शंख, चक्र, गदा पद्मधारी श्री विष्णु भगवान यानि श्री साजन।

तो आओ अपने भाव-स्वभाव तबदील कर उन्हीं श्री साजन का डंका बजाने का संकल्प लेंः-

(असां साजन दा डंका वजा दियांगे)

असां उजड़े सजनां नूं वसा दियांगे, असां महाराज जी दा रस्ता बता दियांगे।

असां सुत्तियां सजनां नूं जगा दियांगे, असां रोंदे सजनां नूं हसा दियांगे।।

संकल्प दा झुखना हटा दियांगे, कुल सृष्टि दा फुरना मिटा दियांगे।

प्रकाश ही प्रकाश करवा दियांगे, असां महाराज जी दा प्रकाश करवा दियांगे।।

संसारी झंझटों में जो पड़ गये।

सारे सजन असलियत अपनी नूं भुल गये।

असां असलियत दी पहचान दा तरीका बतला दियांगे।।

जेहड़ा सजन असलियत अपनी पहचान लैसी, ओ सजन उमड़ उमड़ पैसी।

ओ सजन खिड़ खिड़ पैसी, ओहदी जोत दा नज़ारा दिखा दियांगे।।

असां सर्व व्यापी नाम कहलवा दियांगे, सर्गुण निर्गुण दा नज़ारा दिखा दियांगे।

त्रिकालदर्शी ओ नाम कहलवा दियांगे, परमधाम दा नज़ारा दिखा दियांगे।

बिन सूरजों प्रकाश दा नज़ारा करवा दियांगे।।

बोल सतवस्तु के वाली श्री साजन जी की विजय, विजय, विजय

बोल सतवस्तु के वाली श्री साजन जी की विजय, विजय, विजय

बोल सतवस्तु के वाली श्री साजन जी की विजय, विजय, विजय

शुभकामनाओं सहित।